तवांग: मनोरमता और लोकजीविता की पावन भूमि

लाम छोटन

अरुणाचल प्रदेश में कुल 26 जनजातियाँ एवं सौ से भी अधिक उप जनजातियाँ निवास करती हैं। इन्हीं जनजातियों में से एक है 'मोनपा जनजाति'। मोनपा जनजाति के लोग अरुणाचल प्रदेश के सबसे पश्चिमी इलाके में स्थित तवांग जिले के मूल निवासी हैं। 'तवांग' जिला अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि 'तवांग' शब्द का निर्माण तवांग 'टाउन' में स्थित प्रसिद्ध 'तवांग मठ' के आधार पर हुआ है। 'ता' का अर्थ होता है 'घोड़ा' और 'वांग' का अर्थ होता है- 'आशीर्वाद या चुना हुआ'। तवांग और पश्चिम कामेंग जिले के मोनपा और शेरदुक्पेन महायान बौद्ध मत के लामा परंपराओं का अनुसरण करते हैं। मेम्बा और खाम्बा जनजाति भी सांस्कृतिक रूप से इनके समान होती हैं, जो उत्तरी सीमा के साथ ऊंचे पहाड़ों में रहते हैं। राज्य के पूर्वी भाग में निवास करने वाले खाम्प्ती और सिंग्फो हीनयान बौद्ध मत/संप्रदाय के अनुयायी हैं। अन्य जनजातियों की ही तरह बौद्ध जनजातियों की भी अपनी बोली, संस्कृति, पहचान, वेश-भूषा, जीवन-दर्शन, विश्वास एवं मान्यताएं आदि हैं। तवांग एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है, जिनसे मोनपा जनजाति की पहचान जुड़ी हुई है। मोनपा जनजाति के लोग महायान बौद्ध मत के लामा परंपराओं का अनुसरण करते हैं। मोनपा समाज के बारे में जानने के लिए इनके लोक-साहित्य, लोक-गीतों, लोक-संस्कृति आदि का ज्ञान होना आवश्यक है। मोनपा जनजाति का इतिहास एवं परंपरा इनके लोक-साहित्य में मौजूद है। विशेषकर लोक-गीतों, लोक-संस्कृति आदि में इसकी जीवंत उपस्थिति लिखित एवं वाचिक परंपरा के रूप में देखी जा सकती है। मोनपा जनजाति की परंपराओं को संरक्षित रखने में भोटी लिपि का बहुत योगदान है, लेकिन केवल लामा (भिक्षु) और कुछ चुने हुए लोग ही भोटी लिपि को पढ़ पाते हैं इसलिए इसे मौखिक रूप से भी लोगों तक पहुंचा रहे हैं जबकि यह लिखित रूप में भी संरक्षित हैं।

तवांग: एक रहस्यमय भूमि

लोक कथाओं और बुजुर्गों के अनुसार इस स्थान का चुनाव 'मेरा लामा लोड्रे ग्यात्सों', जो कि एक बौद्ध भिक्षु थे, के घोड़े द्वारा हुआ। किस्सा कुछ यूँ है कि, 'मेरा लामा लोड्रे ग्यात्सों' मठ बनाने के लिए एक उपयुक्त जगह की तलाश कर रहे थे। जगह-जगह घूमने के बावजूद उन्हें ऐसी कोई उपयुक्त जगह नहीं मिली जहाँ वह मठ बना सके। तब उन्होंने मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रार्थना/तपस्या करने का निर्णय लिया। वह अपनी आँखें बंद कर तपस्या करने लगे और जब उन्होंने तपस्या समाप्त कर अपनी आँखें खोली तो उन्होंने देखा कि उनका घोड़ा वहाँ पर नहीं है। वह काफी परेशान होकर घोड़े को ढूँढ़ने लगे। कुछ देर बाद उन्हें अपना घोड़ा एक पहाड़ की चोटी पर मिला। तब वह समझ गए कि उन्हें अपने घोड़े के रूप में मार्गदर्शक मिल गया है। अतः उसी चोटी पर उन्होंने मठ का निर्माण किया और नाम रखा 'गांदेन नामग्यल ल्हात्से' जिसे ज्यादातर लोग 'तवांग' मठ के नाम से जानते हैं। इसी मठ के नाम से इस जिले का नाम भी 'तवांग' पड़ा। प्राकृतिक सुंदरता के मामले में तवांग बेहद समृद्ध और प्राकृतिक रूप से अनुपम है। इसकी खूबसूरती किसी को भी मंत्रमुग्ध कर देती है। यहाँ सूरज की पहली किरण सबसे पहले बर्फ से ढकी चोटियों पर पड़ती है और यह नज़ारा देखने लायक होता है।

वहीं सूरज की आखिरी किरण जब यहाँ से गुजरती है तो पूरा आसमान अनगिनत तारों से भर जाता है। यह नज़ारा देखकर मन करता है कि सारी रात इन्हीं तारों को देखकर गुजारें।

तवांग एक रहस्मय भूमि है। यहाँ पर देखने या घूमने के लिए कई सारे मठ, बर्फ से ढँकी सुनहरी पहाड़ों की चोटी एवं अनगिनत झरने जैसी कई चीजें हैं, जहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। तवांग के प्रमुख आकर्षण में तवांग मठ, सेला पास, बांगाजांग तीर्थस्थल, सांगेत्सर झील, बुमला पास आदि आते हैं। इस सान्गेत्सर झील को लोग आज 'माधुरी झील' के नाम से अधिक जानते हैं, इसका कारण यह है कि कई सालों पहले बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता शाहरूख खान और अभिनेत्री माधुरी दीक्षित ने अपनी 'कोयला' नामक फिल्म की शूटिंग इस झील के सामने की थी, जिससे इस झील का नाम 'माधुरी झील' पड़ा। यहाँ कई सारे अन्य झरने भी हैं। ऐसा ही एक प्रसिद्ध झरना है 'जांग झरना' जिसका पानी तिब्बत से निकलकर आई हुई सान्पो नदी में जाकर मिल जाता है। इस झरने की सुंदरता अविश्वसनीय है। दूरदराज एवं दूर देश के अनेकानेक शहरों से पर्यटक इस सुंदरता का आनंद लेने के लिए आते हैं। पर्यटक इस खूबसूरती को अपने कैमरे में कैद करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। तवांग जिले के बारे में बात करते हुए, इस जगह का ज़िक्र किए बिना तवांग अधूरा है और यह जगह है 'चाग़्ज़म' पुल। 'चाग़्ज़म' का अर्थ है- 'लोहे का पुल'। प्रथम दलाई लामा के शिष्य 'थान्तोंग ग्यालपो', जिन्हें लामा 'चग-ज़म वांगपो' के नाम से जाना जाता है, एक वास्तुकार, दार्शनिक और लौह श्रृंखला पुल निर्माता थे। उन्हें पूरे हिमालय क्षेत्र में 100 से अधिक लोहे के पुल बनाने का श्रेय दिया जाता है। 1420-1430 के दौरान उन्होंने 'कित्पी' और 'मुक्तो' (तवांग में स्थित गाँव) से होकर गुजरने के लिए तवांग-छू नदी पर पुल बनवाया। बेहतरीन धातु विज्ञान का नमूना पेश करने वाला यह पुल शहर से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तवांग में आज मोनपाओं के 20,000 से भी अधिक घर हैं। इस आबादी के सभी लोग महायान बौद्ध मत के अनुयायी हैं। प्रत्येक घर में पूजा-पाठ के लिए एक अलग कमरा होता है जिसे 'छोइषम/छोस्षम' कहा जाता है। अगर आप इनके घरों में जाएँगे तो इस कमरे में आपको गौतम बुद्ध, गुरु पद्मसंभव जैसे आदि देवताओं की मूर्तियाँ एवं तस्वीरें देखने को मिलेंगी। इस पवित्र कमरे में रोज़ सुबह भगवान को पानी चढ़ाकर, अगरबत्ती जलाकर और भगवान से प्रार्थना कर मोनपा लोगों की दिन की शुरुआत होती है। वे बौद्ध-धर्म पर विश्वास तो करते ही हैं, लेकिन इसके विपरीत पशु बलि का भी पालन करते हैं।

तवांग : लोक जीवन

अरुणाचल प्रदेश के अन्य जनजातियों की ही तरह मोनपा जनजाति के लोग भी अपना पोशाक स्वयं बनाते हैं। उनका पोशाक अधिकतम लाल, काले और सफ़ेद रंग के मिश्रित होते हैं। पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले पोशाक को 'अलिफुदुंग' या 'खंजर' कहा जाता है जो कि भेड़ के ऊन से तैयार किया जाता है। पुरुषों के लिए एक दूसरा पोशाक भी हैं, जिसे जानवर के चमड़े से बनाते हैं, उसे 'पक्चा' कहा जाता है। पतलून वह अपनी मर्ज़ी के पहन सकते हैं। महिलाओं के पोशाक कई हिस्सों में बंटे हुए होते हैं- एक लंबा गाउन जिसे 'शिन्का' कहते हैं। इसे असम के एंडी सिल्क (रेशम) से बनाते हैं। यह पोशाक कंधों से घुटने तक ढंका हुआ होता है। इसे कमर पर 'खेचिन' नामक लाल रंग की पट्टी से बाँधा जाता है। कमर के पिछले भाग पर लाल या काले रंग का चौकोर ऊनी कपड़ा बाँधा जाता है जिसे 'तेंकिमा'/'तेंगाकिमा' कहा जाता है। शिन्क्गा के ऊपर एक एंडी सिल्क शर्ट पहनी जाती है, जिसे 'एलेन तोदुंग' के नाम से जाना जाता है। एलेन तोदुंग के ऊपर और एक शर्ट पहनते हैं,

जिसे 'क्यंचन' कहा जाता है। महिलाएँ ठण्ड के समय एक अलग कोट भी पहनती हैं जिसे 'बई तोदुंग' कहते हैं यानी ऊन से बना हुआ कोट। मोनपा पारंपरिक जूतों को 'मोन ल्हम' के नाम से जाना जाता है जो जानवरों के चमड़े से बने हुए होते हैं। यह महिला और पुरुष दोनों के लिए समान होता है।

आभूषण में महिलाओं के लिए कान के छल्ले, हार और चूड़ियाँ होती हैं। अँगुलियों के छल्ले आमतौर पर चांदी और तांबे के बने होते हैं जो कीमती पत्थरों से सजी होती हैं। महिलाओं द्वारा ग्रहण की जाने वाली चूड़ियों को 'न्यन-दुप' कहते हैं, कान की बाली को 'आलोंग' जो सोने और चांदी की बनी हुई होती है, बालों को सजाने के लिए रंगीन धागों का इस्तेमाल करते हैं जिसे 'ख़्रसींग' कहते हैं। उनके द्वारा पहने जाने वाले हार को 'कायकोर' कहते हैं, साथ ही एम्बर मोतियों के माला भी पहनते हैं जिसे 'पॉश फ्रेंगा' कहा जाता है। मोनपा लोग कलाकार और हुनरमंद होते हैं। कई जगह ऐसे हैं जिन्हें कलात्मक कृतियों के लिए जाना जाता है, जिसमें गाँव के पुरुष द्वारा सुंदर थांगका पेंटिंग बनाना, बुनाई करना एवं लकड़ी की नक्काशी करना शामिल है। गाँव की महिलाएँ भी कलाबाजी में कम नहीं हैं। पारंपरिक पोशाक बनाना, पारंपरिक बैग बनाना, गाले बनाना, स्वेटर बुनना आदि चीज़ें महिलाओं द्वारा की जाती हैं। इन सबके अलावा इस गाँव के लोग झूम खेती भी करते हैं। उनकी प्रमुख फसलों में मड़ुवा (रागी), धान, जौ, चावल, मक्का, गेहूं, बाजरा जैसी नकदी फसलों का नाम लिया जा सकता है। इनके अलावा मिर्च, कद्दू, टमाटर, मूली, आलू, अदरक, लहसुन, हल्दी, प्याज़, पत्ता गोभी, करेला, सोयाबीन, सेब, कीवी, अखरोट, संतरे, प्लम इत्यादि भी उपजाते हैं जिन्हें बेचकर वे अपना घर-परिवार चलाते हैं। याक, गाय, सूअर, भेड़ एवं मुर्गी जैसे पशुओं को घरेलू पशुओं के रूप में रखा जाता है। यहाँ के लोगों के घर सामान्य रूप से पत्थर के बने हुए होते हैं। घरों की छतें और फर्श लकड़ी के तख्तों से बने होते हैं। मोनपा समुदाय में यह रिवाज है कि किसी भी नए काम को आरंभ करने से पहले लामाओं (भिक्षु) से परामर्श करना होता है। उनके द्वारा दी गई शुभ तिथि में ही कार्य आरंभ करते हैं। जैसे- घर बनाना, एक शहर से दूसरे शहर स्थानांतरण होना, नया व्यापार शुरू करना इत्यादि। मोनपा बस्तियों में यह सामान्य रिवाज है। यहाँ घर की नीव भी लामाओं द्वारा दी गई शुभ तिथि में ही रखी जाती है।

मोनपा लोगों की जीवन शैली बहुत ही सरल एवं सहज है। वे सादा जीवन, उच्च विचार (Simple Living, High Thinking) में विश्वास रखते हैं अर्थात आज के आधुनिक युग में लोगों की ज़रूरतें एवं इच्छाएँ हद से ज्यादा बढ़ गई हैं मगर आज भी बस्ती के लोग काफी हद तक अतीत के जीवन का पालन करने की कोशिश करते हैं। उनका मानना है कि, अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को सीमित रखना चाहिए क्योंकि इनका कोई अंत नहीं है। यदि वह अपनी हर इच्छा को पूरा करते जाएँगे तो वे कभी भी संतुष्ट नहीं होंगे क्योंकि इनका कोई अंत नहीं है इसलिए वे अपने बच्चों को भी बचपन से यही सीख देते आ रहे हैं। मगर इच्छाओं की तरह उनकी सोच या दृष्टि सीमित नहीं है। वे केवल अपने रोजाना के कामों तक ही नहीं सोचते हैं, बल्कि उनके आस-पास के सकारात्मक बदलावों के बारे में भी सोचते हैं। वे केवल अपने और अपने परिवार के विकास के बारे में नहीं बल्कि एक-दूसरे का सहारा बन अपने आस-पास के लोगों का विकास, अपनी बस्ती के विकास के बारे में भी सोचते हैं।

तवांग: कृषि व्यवस्था

मैं 'बघर' बस्ती में पैदा हुई हूँ। यहाँ के लोग पानी खेती और झूम खेती दोनों करते हैं मगर झूम खेती अधिक मात्रा में करते हैं। झूम खेती में ज़्यादातर रागी/मड़ुवा तथा धान लगाते हैं। 'लोसर' उत्सव के ख़त्म होते ही, यानी कि मार्च महीने के अंत में खेती-बारी शुरू हो जाती है। सबसे पहले पिछले वर्ष के फसलों को काटने

के बाद खेतों में जो अनावश्यक चीज़ें बच गई होती हैं उन्हें साफ़ किया जाता है। उन सारी अनावश्यक चीज़ों को एक जगह इकट्ठा कर, जंगल से सूखे पत्ते लाकर उस पर डालते हैं और जलाते हैं। लोगों का मानना है कि वह जले हुए पत्तों के राख खेतों में खाद (Fertilizer) का काम करती है और साथ ही खेतों की साफ़-सफाई में लोगों का काम आसान भी कर देती है। खेतों की साफ़-सफाई हो जाने के बाद, बीज बोने के लिए लोग जंगल में एक ऐसी जगह का चुनाव करते हैं जहाँ पहले किसी ने खेती नहीं की हों क्योंकि ऐसी जगहों पर मिट्टी की उर्वरता अधिक होती है। उपयुक्त जगह का चुनाव करने के बाद उस जगह की साफ़-सफाई करते हैं और 2-3 बार उसकी खुदाई कर उसे बीज बोने लायक बनाकर बीज बो देते हैं।

पुराने समय में खेतों को जोतने के लिए हल और बैलों का इस्तेमाल किया करते थे, लेकिन आज के दिनों में सारे लोगों ने ट्रैक्टर वगैरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। ट्रैक्टर का उपयोग करने की एक अच्छी बात यह है कि वह बैलों की तुलना में कम समय में अधिक कार्य करेगा, लेकिन इसकी एक बुरी बात यह है कि वह मिट्टी को सख्त बनाता है जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है। खेतों की जुताई करके, उसे फसल उपजाने लायक बनाने के बाद, अस्थायी रूप से बनाए गए खेतों से अनाज के पौधों को लाया जाता है और उसे अपने खेत में लगाते हैं। लगाने के 3-4 दिन के पश्चात पौधों को अनेक प्रकार के कीड़ों-मकोड़ों से सुरक्षित रखने के लिए उसमें यूरिया जैसे रासायनिक तत्त्व डाले जाते हैं। फिर पंद्रह-से-बीस दिनों के बाद फसलों के बीच जो अनावश्यक पौधे निकल आते हैं, उसे साफ़ किया जाता है।

देखते-ही-देखते यह छोटे-छोटे पौधे लहलहाते हुए खेतों में बदल जाते हैं। फसल (रागी) के पकने से पहले की अवस्था (stage) में जब रागी अधपका होता है तो लोग उसे पकाकर 'आरा' (रागी से बनने वाला पारंपरिक पेय पदार्थ) के साथ या चटनी के साथ खाते हैं, जिसे 'कोंप न्गोछा' कहते हैं। धीरे-धीरे अनाज पकने लगता है। फसल के पकने के साथ ही लोगों की चिंताएं समाप्त नहीं होती बल्कि और भी बढ़ जाती है क्योंकि कटाई के समय फसल झरने, पक्षियों द्वारा नुकसान पहुँचाने तथा काटने के बाद फसल में नमी होने के कारण घरों में रखने के बाद उसमें फूफूंद लगने की समस्या रहती है इसलिए कटाई के बाद उसे 5 से 6 दिन तक सुखाया जाता है। सूखने के बाद अनाज के खाद्य भाग को भूसी और पुआल से अलग किया जाता है और फिर अच्छे से साफ़-सफाई हो जाने के बाद उसे भंडारण में रख देते हैं। फिर नए अनाज का स्वाद चखने के लिए लोग मड़ुवा/रागी को पीसकर आटा बनाते हैं और इसी आटे से मोनपा लोगों का एक पारंपरिक खाद्य पदार्थ होता है जिसे 'ज़न' कहा जाता है, को बनाकर खाते हैं और साथ में मड़ुवा से बने पेय पदार्थ 'आरा' को पीते हैं। खेतों का काम समाप्त होने के बाद भी गाँव के लोग आराम नहीं करते हैं। चूंकि खेतों का काम समाप्त होते-होते सर्दियाँ आ जाती हैं, इसलिए गाँव वाले झुंड बनाकर सर्दियों में जलाने के लिए लकड़ी इकट्ठा करने जाते हैं। उनके जीवन में इतनी व्यस्तता के कारण ही वे खुशहाल भरी जिंदगी व्यतीत करते हैं।

तवांग: लोक समुदाय

मोनपा जनजाति में गाँव के मुखियाँ को 'चोर्गन' कहते हैं, जिसका दायित्व गाँव के प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखना है। मेरे गाँव 'बघर' में भी यही परंपरा प्रचलित है। व्यक्ति से संबंधित कोई भी निर्णय गाँव के भीतर विवाद और सभी प्रकार के विवाद जैसे-चोरी, झगड़े, तलाक, आपराधिक और छोटे-मोटे मामले ग्राम परिषद द्वारा सदस्यों की सहमति से निपटाए जाते हैं। ग्राम परिषद द्वारा जो भी निर्णय दिया जाता है, वह अंतिम और

बाध्यकारी होता है लेकिन दूसरी ओर यदि पक्ष ग्राम परिषद के फैसले से सहमत नहीं है तो वे न्यायिक अदालत में अपील कर सकता है। दो गाँवों के बीच कोई बड़ा मुद्दा हो जाए तो 'मंगमा'(ग्राम समुदाय) शामिल हो सकता है। 'मंगमा' संयुक्त रूप से प्रतिनिधित्व करता है आम संपत्ति जैसे, जमीन की सीमा विवाद आदि मामलों का सामना करने के लिए नकद या वस्तु के रूप में समान रूप से योगदान देता है। स्थानीय स्वशासन में गाँव के चोर्गन को गाँव का सबसे ऊँचा और शक्तिशाली माना जाता है। गाँव के सभी प्रमुख मुद्दों को चोर्गन के सामने लाया जाता है और वह आगे की कार्रवाई के लिए ग्राम समुदाय का राय लेता है। अंततः 'मंगमा' (ग्राम समुदाय) सर्वोच्च निकाय है जो सभी मामलों को सर्वसम्मति से तय करता है और इस तरह की स्थिति से उबरने के लिए उचित निर्णय लेता है। इसके अलावा यदि कोई गाँव के नियमों और विनियमों (Rules and Regulations) का उल्लंघन करता है तो उस पर जुर्माना लगाया जाता है और ग्राम कानून के तहत दंडित किया जाता है, जो लिखित दस्तावेजों में नहीं है। ग्राम प्रशासन चलाने के अलावा चोर्गन विभिन्न बौद्ध मंदिरों के रखरखाव तथा गोंपाओं की मरम्मत करने और साल में होने वाले बौद्ध समारोहों के उचित प्रदर्शन को सुनिश्चित करने के लिए भी ज़िम्मेदार है।

अरुणाचल प्रदेश में मोनपा जनजाति बहुसंख्यक जनजातियों में से एक है। अतएव, बदलते समय और युग में आधुनिकता का प्रभाव इनके ऊपर पड़ना स्वाभाविक है। आज जनजातीय समाज में पहले से कई गुना अधिक बदलाव देखे जा सकते हैं। स्वतंत्र रूप से भाषा और बोली का साहित्यिक स्वरूप आज भी लिखित न होकर वाचिक- मौखिक मात्रा में प्रचलन में है। मोनपा जनजाति के जो भी थोड़े-बहुत दस्तावेज या साहित्य मिलते हैं, तो वे अंग्रेजी, हिंदी, भोटी आदि में है। मोनपा जनजाति अरुणाचल की मुख्य जनजातियों में से एक है और इसकी सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका इतिहास-बोध एवं वाचिक स्मृतियों से गहरे रूप में जुड़ी हुई हैं। मोनपा जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं, मिथकों, रीति-रिवाजों, त्योहार, लोक-साहित्य आदि के गहन छानबीन और अध्ययन-विश्लेषण द्वारा आधुनिकता को नए रूपों में चिन्हित तथा परिभाषित करना महज बौद्धिक कवायद नहीं कहा जा सकता है। यह मोनपा लोक-साहित्य की ज्ञान-परंपरा को 'री-लोकेट' और 'री-जेनरेट' करने का प्रयास है। यह सच है कि लोक-साहित्य मुख्यतः परंपरागत मान्यताओं एवं मिथक आधारित सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य-दर्शन पर टिके होते हैं। आधुनिक शिक्षा, लोक-साहित्य को महत्त्व दे रही है, क्योंकि जन आस्था, लोक विश्वास, सामूहिक उल्लास, आकांक्षा, गर्व, गौरव-बोध आदि जगाने में इनकी भूमिका अन्यतम है। यह जानना दिलचस्प होगा कि मोनपा जनजाति के लोग अपनी लोक-आस्था को किस तरह संजोते तथा परंपरा व मिथक आदि को किस प्रकार महत्त्व देते थे। आज के आधुनिक समय में इस संदर्भ व परिप्रेक्ष्य में क्या कुछ वांछित-अवांछित, ज़रूरी-गैर-ज़रूरी, वास्तविक-अवास्तविक बदलाव आदि हुए हैं या कि आधुनिकता ने मोनपा जनसमाज को किस हद तक प्रभावित करते हुए कितना बदल दिया है, इन तमाम बिंदुओं को जानना भी जरूरी है। मोनपा जनजाति पर आधुनिकता के पड़ रहे प्रभाव और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने तवांग की भू-स्थितिकी और लोक-बसाव पर गहरा असर छोड़ा है जिस ओर विवेकी ढंग से सोचे जाने की जरूरत है।

*(**लेखकीय परिचय :** लाम छोटन राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पीजीडीएफएच पाठ्यक्रम की विद्यार्थी रह चुकी हैं। मोबा: 8798866512, ई-मेल : lamchotton143@gmail.com)*